

## तथागत बुद्ध और महात्मा गांधीजी का अहिंसावाद

प्रा. डॉ. बुवा सूर्यभान रमेश

पाली विभाग, कर्मयोगी तुळशीराम पवार महाविद्यालय, हाडोळती ता. अहमदपूर जि. लातूर ४१३५१४ महाराष्ट्र, भारत

Corresponding author E-mail: suryabhan.buwa1@gmail.com

Received: 13 October, 2023 | Accepted: 26 October, 2023 | Published: 28 October, 2023

विश्वाशान्तिके प्रणेते तथागत बुद्ध और महात्मा गांधीजी ऐसे महापुरुष हुए हैं जिनके विचारों में अहिंसा का आधार स्पष्ट दिखाई पड़ता है। इस दोनो महापुरुषोने अहिंसा के दायरे को एक विशाल रूप, एक विस्तृत रूप देने का काम किया है, जिस कारण अहिंसा की विचारधारा आजभी हमारे जीवन के हर एक पहलु वास्तव मे छुलेती है।

तथागत बुद्ध और महात्मा गाँधी के अनुसार समस्त प्राणी मात्रमे विभिन्न एकमात्र वस्तु जो हमें पशु से भिन्न करती है वह है अहिंसा। मानव होने या बनने के लिए अहिंसा का भाव होना आत्यआवश्यक है, अगर व्यक्ति हिंसक है तो फिर वह पशुतुल्य के समान है। अहिंसा का मतलब है, किसीभी प्राणी मात्राकि अहत्या न करना, यह अर्थ वास्तव मे अनुपालन किया और जीवन में त्याग और प्रेम की स्थापना; मन, वचन और कर्म से किसी को कष्ट नहीं देना। यह वर्तमान समय में ही नहीं अपितु और भविष्य की संभावनाओ को देखकर यह आसानी से कहा जा सकता है कि अहिंसा की सर्वकालिक सत्य है चाहे हम वास्तव मे अपने जीवन में उतार पाएं या नहीं।

प्राचीन भारतका इतिहास यदी देखा जाय तो अहिंसा का प्रचार -प्रसार तथागत बुद्ध से हि शुरू हुवा है। मगर अहिंसका यह मतलब नाही कि खुद कि आत्म रक्षा करण पाय तब जीविकोपार्जन हेतु, युद्ध में या आत्मरक्षार्थ, हिंसा से कोई परहेज नहीं था। तथागत बुद्ध ने इसका दायरा बहुत विस्तृत कर दिया, इसे धम्म का आधार ही बता दिया। जैसेकी कालाम सुत्तामे बताया गाय है। और सुत्तानिपात चूलवग्ग के महामंगल सुत्तामे कहा गाय की, अहिंसा केवल काय से नाही तो मन से हि नाही करा चाही है।

“आरती विरती पापा, मज्जपाना च संयमो |

अप्पमादो च धम्मसू, एतं मंगलमुत्तमं || (सुत्तानिपात) २.४.

अर्थ मन शरीर और वाणीसे पाप का त्याग करना, मादक पदार्थ का सेवन न करना धम्मकार्य में तत्परता रखना यही उत्तम मंगल है।

बौद्ध धम्ममें अहिंसा मध्यम ब्रत की तरह है, इसीलिए इसका प्रचार-प्रसार अखिल विश्वमें प्रसारित हुआ है। तथागत बुद्ध ने भी हमें अहिंसा की महिमा समझाई और बौद्ध धर्म के विस्तार के साथ अहिंसा का प्रभाव अपेक्षाकृत बहुत बड़े जनसमुदाय पर पड़ा। यह तो हुआ प्राचीन कालका समय पर आधुनिक समय में महात्मा गांधीजी ने भी अहिंसा का सहारा ले कर, हमारा जीवन के एक नए आयाम से परिचय करवाया है। महात्मा गाँधीजी ने अहिंसा को धर्म से बहार निकालकर वास्तव में अपने जीवन में लाकर एक आम आदमी के जीवन पर उतारा और इस नैतिक साधना से अपने व्यक्तिगत तथा राजनैतिक जीवन में समावेश किया है।

तथागत बुद्ध और महात्मा गाँधीजी की अहिंसा के स्वरूप में मूल रूप से कोई अंतर नहीं है, वास्तव में इन दोनों की अहिंसा तथ्यात्मक रूप से एक ही है, बस उसके अनुप्रयोग की व्याख्या में अंतर के कारण हम अहिंसाके बारे में तथागत बुद्ध की अहिंसा और महात्मा गाँधीजी की अहिंसा नाम से अभिहित करते हैं। यह महापुरुषों के सिद्धांतों में अहिंसा ही केंद्र बिंदू है। अन्य तत्त्व अहिंसा को ही स्थापित करने में सहायक होते हैं। महात्मा गाँधीजी के अहिंसा जैन धर्म से लिये हैं। जैन धर्म के सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह और बौद्धों धम्मके के पंचशील जैसे कि पाणातिपाता वेरमणी

सिक्खापदं समादियामी ।

अदिन्नदाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामी ।

कामेसुमिच्छाचारा वेरमणी सिक्खापदं समादियामी ।

मुसावादा वेरमणी सिक्खापदं समादियामी ।

सुरामेय्यामज्जपमादट्टाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामी ।

अर्थात्

मैं प्राणी हिंसासे अलिप्त रहनेकी प्रतिज्ञा करता हू ।

मैं चोरी करणे से अलिप्त रहनेकी प्रतिज्ञा करता हू ।

मैं काम असक्तीसे अलिप्त रहनेकी प्रतिज्ञा करता हू ।

मैं झूठ बोलानेसे अलिप्त रहनेकी प्रतिज्ञा करता हू ।

मैं शराब मादक द्रव्य तथा नसेली पदार्थसे अलिप्त रहनेकी प्रतिज्ञा करता हू । याही बौद्ध धम्मके पंचशील समस्त विश्वमें प्रसिद्ध है । और महात्म गाँधीजी के सिद्धांत, सभी अहिंसा को स्थापित करने वाले तत्त्व ही हैं।

तथागत बुद्ध कि अहिंसा करुणा की स्थापना पर बल देती है। उन्होंने अहिंसा का सहारा लेकर तत्कालीन रूढ़ियों को उलटने का प्रयास किया है । और महात्मा गाँधीजी ने भी अहिंसा को समाज सुधारना के लिये तथा स्वतंत्रता प्राप्ति का मुख्य हथियार बनाया। विश्वकल्याण, मानवता के कल्याण के लिए - प्रेम और त्याग को आधार बनाया । और अपने वास्तव जीवन में आपणया है गांधीजी ने एक नई बात कही कि अहिंसा परमो धर्म कहा है यही सामाजी और राजनैतिक बल भी है।

महात्मा गांधीजी ने अहिंसा को समस्त समाज के लिए सर्वव्यापि बनाते हुए वास्तव जीवन में अहिंसा के महत्व को बताया है। इसीलिए महात्मा गाँधीजी की अहिंसा एक व्यावहारिक आधार बन गई है और आज की वास्तव परिस्थितियों में यह आवश्यक है।

महात्मा गांधीजी कहते हैं की अहिंसा प्रेम का दर्शन है, सत्य की प्राप्ति है यह एक साधना है। तथागत बुद्ध और महात्मा गाँधीजी की अहिंसा और सत्य एक दूसरे के पूरक हैं, सत्य हुए बिना अहिंसक नहीं बना जा सकता और बिना अहिंसक हुए सत्य प्राप्त नहीं किया जा सकता है। तथागत बुद्ध की अहिंसा को देखे तो यह स्पष्ट होता है कि जब हम किसी को जीवन नहीं दे सकते हो तो किसीकी जान ले हि नहि सकते हो | यह हमें कोई अधिकार भी नहीं है। न हमें किसी को उसके जीवन से जुड़े अधिकारों को बाधित करने का अधिकार है। तथागत बुद्ध के अहिंसा का विचार से मनुष्य की चेतना का निर्माण होता है, यहाँ यह विचार मन, वचन और कर्म में एकरूपतालाने का कारण है।

यदी महात्मा गाँधीजी की अहिंसा वास्तव के समय में भी सब आयामों को जोड़ते हुए जैसे, समस्त सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक जीवन शैली को प्राकृतिक के आधार पर संरक्षित करने में सफल हुई है। एक तरफ गाँधी फसलों को नुकसान करने वाले कीड़ों को मारने का विरोध नहीं करते, मगर दूसरी और अनावश्यक रूप से वनस्पति को भी नुकसान पहुंचाने को भी वे अनुचित मानते थे। यही आत्म सवरक्षण कि बात करते दिखाई पडती है। महात्मा गाँधीजी अहिंसा की बात करते हुए यह कहते हैं हिंसा प्रतिहिंसा को जन्म देती है और अहिंसा प्रेम दया और करुणा को जन्म देती है। समस्त भारतीय दर्शन में अहिंसा का विचार पूर्व से विद्यमान था, जिसे महात्मा गाँधीजी ने नया आयाम दिया। इस आधार पर तथागत बुद्ध के इस दर्शन को व्यापक फलक पर लाने में गाँधी ने जो काम किया है वह आज भी प्रसांगिक है।

वास्तविक व्यवहारिकता और मानवीयता के साथ महात्मा गाँधीजी की अहिंसा में केवल स्थूल हिंसा का विरोध नहीं करना उसमें उच्च नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का समावेश भी है, इसीलिए अहिंसा मन, कर्म और वचन से जुड़ी हुई है। उनके अनुसार अहिंसा के आधार पर ही सुव्यवस्थित समाज की स्थापना और मानव प्रगति संभव है। यही वास्तव में महात्मा गांधीजी लाना चाहते थे।

महात्मा गाँधीजी कहते हैं कि हमारा भारत का समाजवाद अथवा साम्यवाद अहिंसा पर आधारित होना चाहिए जिसमें मालिक-मजदूर एवं जमींदार-किसान के मध्य परस्पर सद्भावपूर्ण सहयोग हो। निःशस्त्र अहिंसा की शक्ति किसी भी परिस्थिति में सशस्त्र शक्ति से सर्वश्रेष्ठ होगी। सच्ची अहिंसा मृत्युशैया पर भी मुस्कराती रहेगी। बहादुरी, निर्भीकता, स्पष्टता, सत्यनिष्ठा, इस हद तक बढ़ा लेना कि तीर-तलवार उसके आगे तुच्छ जान पड़ें, यही अहिंसा की साधना है। शरीर की नश्वरता को समझते हुए, उसके न रहने का अवसर आने पर विचलित न होना अहिंसा है। इसीलिए तथागत बुद्ध और महात्मा गांधीजी के अमोल विचार है कि आज युद्ध कि नहीं तो बुद्ध की जरूरत है।

## संदर्भ सूची

1. महात्मा गांधी मेरे सपनोंका भारत, मयत्री सर्व सेवा संघ वाराणसी प्रा.स १९६९
2. रायखेलकर ए.आर. आर्थिक विचारांचा इतिहास विध्या बुक्स प. औरंगाबाद
3. चौशालकर अशोक साठे सत्यरंजन विश्वस्त पद्धती विकास पिडिया
4. डॉ.बी.आर.आंबेडकर (अनुवाद तलवंकर) भगवान बुद्ध व त्यांचा धम्म सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली २००९